उच्च प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों में जीवन कौशल के विकास में बाल संसद की प्रभाविता का अध्ययन

हर्षवर्धन*

प्रस्तुत शोध पत्र में उच्च प्राथमिक विद्यालय के विद्यार्थियों में जीवन कौशल के विकास में बाल संसद की भूमिका का अध्ययन किया गया है। इस शोध अध्ययन का उद्देश्य उच्च प्राथमिक विद्यालय के विद्यार्थियों में जीवन कौशल के विकास में बाल संसद संचालित एवं बाल संसद विहीन विद्यालयों की प्रभाविता का अध्ययन करना है एवं उच्च प्राथमिक विद्यालय में जीवन कौशल के विकास में लिंग एवं क्षेत्र के आधार पर बाल संसद की प्रभाविता का अध्ययन करना है। प्रस्तुत शोध में जनसंख्या के रूप में उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा प्रयागराज जिले के नैनी एवं विकास खंड चाका में संचालित उच्च प्राथमिक विद्यालयों के कक्षा 8 के अध्ययनरत सत्र 2021–2022 के विद्यार्थियों को चुना गया तथा उद्देश्यपूर्ण विधि से प्रतिदर्श के रूप में 13 उच्च प्राथमिक विद्यालयों में से कुल 480 विद्यार्थियों का चयन किया गया जिसमें बाल संसद संचालित विद्यालय के विद्यार्थियों की संख्या 237 एवं बाल संसद विहीन विद्यालय के विद्यार्थियों की संख्या 243 थीं। आँकड़ों का संकलन करने के लिए स्वनिर्मित जीवन कौशल मापनी का निर्माण किया गया तथा प्राप्त आँकड़ों का विश्लेषण एवं सार्थकता स्पष्ट करने के लिए विवरणात्मक सांख्यिकी का प्रयोग किया गया था। शोध निष्कर्ष में यह पाया गया कि जीवन कौशल के विकास में बाल संसद संचालित एवं बाल संसद विहीन विद्यालय के विद्यार्थियों की अभिवृत्ति में सार्थक अंतर है। जीवन कौशल के विकास में बाल संसद संचालित शहरी क्षेत्र के विद्यार्थियों एवं बाल संसद संचालित ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थियों की अभिवृत्ति में सार्थक अंतर है। जबकि जीवन कौशल के विकास में बाल संसद संचालित विद्यालय के लड़कों एवं लड़कियों की अभिवृत्ति में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

इस नई सदी में शिक्षा के माध्यम से विश्व कई क्रांतिकारी बदलाव के दौर से गुज़र रहा है, जैसे— विज्ञान, प्रौद्योगिकी, वैश्वीकरण, निजीकरण, शहरीकरण, औद्योगीकरण आदि। इसके साथ ही वर्तमान समय के विद्यार्थी ग्लोबल वार्मिंग, अकाल, गरीबी, आत्महत्या, जनसंख्या विस्फोट के साथ-साथ कई सामाजिक समस्याओं का सामना कर रहे हैं जिसमें मुख्य रूप से भावनात्मक, शारीरिक एवं मनोवैज्ञानिक समस्याएँ शामिल हैं। समाज में व्याप्त गलाकाट प्रतियोगिता, बेरोज़गारी एवं रोज़गार की कमी शिक्षितों के लिए कुछ प्रमुख चिंताओं का विषय बनी हुई है एवं किसी के पास स्वयं के लिए, अपने

**शोधार्थी,* शिक्षा विभाग, शिक्षा विद्यापीठ, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा, महाराष्ट्र 442 001

आस-पड़ोस के साथ सहानुभूति विकसित करने और समाज में सद्‌भावना रखने का समय नही है। युवा पीढ़ी को अपनी शारीरिक एवं बौद्धिक क्षमता के कारण समाज का सबसे उपयोगी अंग माना जाता है, लेकिन वास्तविक परिदृश्य में अधिकांश युवाओं में मार्गदर्शन और प्रेरणा की कमी के कारण वह अपनी क्षमता का उचित उपयोग नहीं कर पाते हैं। इन सभी चुनौतियों के समाधान के लिए एक प्रभावी शिक्षा प्रणाली की आवश्यकता है। दूसरे शब्दों में शिक्षा का मुख्य बिंदु विद्यार्थियों में ऐसे कौशलों को विकसित करना है जिससे वह समाज में सामंजस्य स्थापित कर सके (प्रजापति और अन्य, 2017)। जीवन कौशल शिक्षा का उद्देश्य विद्यार्थियों को शारीरिक, मानसिक एवं संवेगात्मक रूप से स्वस्थ बनाएँ रखना है जो विद्यार्थियों को एक सार्थक जीवन में योगदान करती है। जीवन कौशल वे क्षमताएँ हैं जो विद्यार्थियों में मानसिक स्वास्थ्य एवं क्षमता को बढ़ावा देने में सहायक होती है, क्योंकि वे जीवन की वास्तविकताओं का सामना करते हैं। इसमें विद्यार्थी को स्वयं की सुरक्षा, स्वास्थ्य एवं सामाजिक संबंधों को सशक्त बनाने के लिए सकारात्मक दिशानिर्देश प्रदान होते हैं। जीवन कौशल सामाजिक प्रणाली के रूप में प्रभावी ढंग से कार्य करने के लिए एवं विद्यार्थियों के पूर्ण एवं एकीकृत विकास की सुविधा प्रदान करता है। जीवन कौशल शिक्षा के माध्यम से विद्यार्थी स्वयं की क्षमताओं को जानकर उसका विकास कर सकेंगे। जीवन कौशल शिक्षा को सभी विद्यार्थियों के लिए बुनियादी रूप से सीखने की आवश्यकता है। यह विद्यार्थियों को चुनौतीपूर्ण परिस्थितियों में सशक्त बनाने में सहायक होगी।

बाल संसद

बाल संसद, प्राथमिक विद्यालय के विद्यार्थियों का एक मंच है, जहाँ विद्यार्थी अपने विद्यालय, समाज-परिवार, स्वास्थ्य एवं शिक्षा के अधिकारों की बात खुलकर कर सकते हैं। यह विद्यार्थियों में लोकतांत्रिक एवं नागरिक कौशल विकसित करने का माध्यम है। यह एक ऐसा मंच है जिसमें विद्यार्थी विद्यालय प्रबंधन एवं संचालन प्रक्रिया में सहभाग करते हैं इसके साथ ही उन्हें स्थानीय एवं वैश्विक समस्याओं पर अपने विचार एवं उसका समाधान अभिव्यक्त करने की स्वतंत्रता होती है। इसमें कई प्रकार के पद होते हैं, जैसे— राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री, खेल मंत्री, पर्यावरण मंत्री आदि। इन सभी को अपने पद के अनुसार कार्यभार प्रदान किया जाता है। विद्यालय में विद्यार्थियों के लिए बाल संसद के माध्यम से अनेक गतिविधियों का आयोजन किया जाता है। इन गतिविधियों का मुख्य उद्देश्य विद्यार्थियों को क्रियात्मक ज्ञान प्रदान करना है। बाल संसद के पदाधिकारियों द्वारा विद्यालय में स्वच्छता कार्यक्रम, पर्यावरण गतिविधियों एवं बहु-सांस्कृतिक कार्यक्रमों जैसे विभिन्न सामाजिक एवं शैक्षणिक गतिविधियों का आयोजन किया जाता है।

संबंधित सहित्य का सर्वेक्षण

नशीदा एवं अन्य (2019) ने अपने लेख में यह बताया गया है कि विकासशील एवं विकसित देशों के जीवन कौशल शिक्षा में अंतर पाया गया है। सामान्य रूप से विकसित देशों ने अपने युवाओं में सकारात्मक व्यवहार को बढ़ावा देने के लिए जीवन कौशल कार्यक्रम का आयोजन नियमित रूप से करते हैं। इसके

विपरीत विकासशील देशों में जीवन कौशल कार्यक्रमों में नियमित जीवन कौशल कार्यक्रम का अभाव पाया जाता है। मुछाल (2019) ने अपने अध्ययन में पाया कि ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थी-शिक्षकों की स्वास्थ्य केंद्रित, शैक्षिक उन्मुख, आजीविका उन्मुख एवं चलन (ट्रेंड) संबंधित जीवनशैली के मध्यमानों में कोई सार्थक अंतर नहीं है, जबकि ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थी-शिक्षकों की समाज उन्मुख एवं परिवार उन्मुख जीवनशैली के मध्यमानों में सार्थक अंतर है। रोबिसन और अन्य (2019) ने अपने अध्ययन में पाया कि जीवन कौशल कार्यक्रमों में सम्मिलित बच्चों के जीवन कौशल विकास में सकारात्मक विकास हुआ है। इसके साथ ही उनके व्यवहार में सकारात्मक परिवर्तन देखने को मिलता है। मैकमुलेन (2018) ने अपने अध्ययन में पाया कि विद्यार्थियों के व्यवहार पर एक प्रभावी स्कूल, शिक्षक नेतृत्व, जीवन कौशल, हस्त कौशल का सकारात्मक प्रभाव पड़ा है एवं विद्यार्थियों के जीवन में आने वाली समस्याओं के समाधान हेतु विद्यालय के साथ-साथ समाज एवं परिवार का भी सहयोग आवश्यक है। अभिभावकों एवं शिक्षकों ने जीवन कौशल को एक ऐसे विषय के रूप में माना जिससे विद्यार्थियों में वृद्धि, विकास एवं अस्तित्व के लिए प्रासंगिक कौशल विकसित होता है एवं इसके लिए एक नीति तैयार करनी चाहिए जिससे सभी विद्यार्थियों को इसका लाभ प्राप्त हो सके। प्रजापति एंव अन्य (2017) ने अपने अध्ययन में पाया कि वर्तमान समय में जीवन कौशल शिक्षा की प्रासंगिकता निरंतर बढ़ती जा रही है। विद्यार्थियों में जीवन कौशल शिक्षा प्रदान करने से उनमें समायोजन, व्यावहारिकता, संज्ञानात्मक, भावनात्मक, सामाजिक एवं आत्म-प्रबंधन कौशल के विकास में सहायता मिलती है। इसकी सहायता से विद्यार्थियों के दृष्टिकोण, विचार एवं व्यवहार में सकारात्मक परिवर्तन होता है। ली (2016) ने अपने अध्ययन में पाया कि हाँग-काँग एवं चीन में व्यावसायिक विकास शिक्षा, करियर एवं जीवन नियोजन शिक्षा एवं स्कूल आधारित पाठ्यक्रम विकास कार्यक्रम नियमित रूप से संचालित होता है। इन कार्यक्रमों के माध्यम से विद्यार्थियों को यह अवसर मिलता है कि वह अपने करियर के लिए उचित विकल्पों का चयन कर सके। नायर (2013) ने अध्ययन में पाया कि विद्यालय में जीवन कौशल से संबंधित विभिन्न प्रकार के क्रियाकलाप कराए जाते हैं लेकिन यह केवल विद्यालय तक ही सीमित रहते हैं। जीवन कौशल एक व्यवहार है जिसका विकास करना केवल विद्यालय की ही ज़िम्मेदारी नहीं होनी चाहिए, बल्कि इसके विकास के लिए समाज एवं परिवार को भी सहभाग करना होगा।

अध्ययन की आवश्यकता

जीवन कौशल एक व्यावहारिक प्रक्रिया है जिसे पाठ्यपुस्तकों के माध्यम से नहीं सिखाया जा सकता है इसलिए हमें ऐसे माध्यम की आवश्यकता है जिससे विद्यार्थियों को जीवन कौशल व्यावहारिक रूप से सिखाया जा सके। बाल संसद एक ऐसा मंच है जिसके माध्यम से विद्यार्थियों को जीवन कौशल क्रियात्मक रूप से सिखाया जा सकता है। प्रस्तुत शोध अध्ययन में शोधकर्ता द्वारा विभिन्न शोध कार्य, शोध-पत्र एवं

शोध-लेख का अध्ययन किया गया तथा यह पाया कि जीवन कौशल एवं जीवन कौशल अभिवृत्ति मापनी से संबंधित कार्य किए हैं लेकिन बाल संसद के माध्यम से जीवन कौशल के विकास से संबंधित अध्ययन का अभाव पाया गया है, इसलिए शोधकर्ता ने 'उच्च प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों में जीवन कौशल के विकास में बाल संसद की भूमिका का अध्ययन' किया है।

शोध उद्देश्य

- जीवन कौशल के विकास में बाल संसद संचालित एवं बाल संसद विहीन विद्यालयों की भूमिका का तुलनात्मक अध्ययन करना।
- जीवन कौशल के विकास में बाल संसद की भूमिका का लिंग के आधार पर तुलनात्मक अध्ययन करना।
- जीवन कौशल के विकास में बाल संसद की भूमिका का शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के आधार पर तुलनात्मक अध्ययन करना।

शोध परिकल्पना

- H_{O1} — जीवन कौशल के विकास में बाल संसद संचालित एवं बाल संसद विहीन विद्यालयों के विद्यार्थियों की भूमिका के माध्य फलांकों में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
- H_{O2} — जीवन कौशल के विकास में बाल संसद की भूमिका में लड़के एवं लड़कियों के माध्य फलांकों में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
- H_{O3} — जीवन कौशल के विकास में बाल संसद की भूमिका में शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों के माध्य फलांकों में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

शोध विधि

प्रस्तुत शोध अध्ययन की प्रकृति मात्रात्मक है जिसमें वर्णनात्मक सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है। प्रस्तुत शोध में जनसंख्या के रूप में उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा प्रयागराज जिले के नैनी एवं विकास खंड चाका में संचालित उच्च प्राथमिक विद्यालय के सत्र 2021–2022 के विद्यार्थियों को सम्मिलित किया गया था एवं उद्देश्यपूर्ण विधि से प्रतिदर्श के रूप में 13 उच्च प्राथमिक विद्यालयों (6 बाल संसद संचालित विद्यालय एवं 7 बाल संसद विहीन विद्यालय) से कुल 480 विद्यार्थियों का चयन किया गया एवं आँकड़ों के संकलन के लिए स्वनिर्मित मापनी का प्रयोग किया गया है जिसमें कुल 39 प्रश्न थे। प्रश्नावली की रूप एवं विषयगत वैधता का निर्धारण विषय विशेषज्ञों द्वारा निर्धारित की गई है एवं मापनी की विश्वसनीयता का निर्धारण क्रॉनबैक अल्फा के द्वारा ज्ञात की गई है जिसका मान 0.704 प्राप्त हुआ है। जनसंख्या के वितरण को तालिका–1 में प्रस्तुत किया गया है।

तालिका 1— जनसंख्या का वितरण

क्र. सं.	विद्यालय	विद्यालय की संख्या	संख्या
1.	बाल संसद संचालित विद्यालय	6	237
2.	बाल संसद विहीन विद्यालय	7	243
	कुल	13	480

आँकड़ों का विश्लेषण एवं निर्वचन

प्रस्तुत अध्ययन में आँकड़ों का विश्लेषण तालिका संख्या 2, 3 एवं 4 में प्रस्तुत किया गया है।

तालिका 2— बाल संसद संचालित एवं बाल संसद विहीन विद्यार्थियों के जीवन कौशल के अभिवृत्ति फलांकों का बूटस्ट्रैप स्वतंत्र प्रतिदर्श परीक्षण

<table>
<tr><td colspan="5"></td><td colspan="4">बूटस्ट्रैप</td><td rowspan="3">टी-मान</td><td rowspan="3">सार्थक स्तर</td></tr>
<tr><td colspan="2" rowspan="2"></td><td rowspan="2">माध्य अंतर</td><td rowspan="2">बायस</td><td rowspan="2">मानक त्रुटि</td><td rowspan="2">सार्थकता (द्वि-पुच्छीय)</td><td colspan="2">95% विश्वस्तता अंतराल</td></tr>
<tr><td>निम्नतम</td><td>उच्चतम</td></tr>
<tr><td rowspan="2">जीवन कौशल प्राप्तांक</td><td>कल्पित समान प्रसारण</td><td>1.281</td><td>.017</td><td>.592</td><td>.034</td><td>.065</td><td>2.427</td><td rowspan="2">2.16</td><td rowspan="2">0.05 स्तर पर सार्थक है।</td></tr>
<tr><td>कल्पित समान प्रसारण</td><td>1.281</td><td>.017</td><td>.592</td><td>.034</td><td>.065</td><td>2.427</td></tr>
</table>

प्रथम उद्देश्य

तालिका 2 से यह स्पष्ट होता हैं कि बाल संसद संचालित एवं बाल संसद विहीन विद्यालयों की जीवन कौशल के माध्य फलांकों में अंतर के लिए 95 प्रतिशत बायस करेक्टेड एक्सिलरेटेड अंतराल (.065, 2.427) है। चूँकि इन के माध्य फलांकों में अंतर के लिए 95 प्रतिशत विश्वस्तता अंतराल (CI) की निम्नतम एवं उच्चतम सीमाएँ धनात्मक हैं इसलिए 'बाल संसद संचालित एवं बाल संसद विहीन विद्यालयों के जीवन कौशल के माध्य फलांकों में सार्थक अंतर नहीं है' की शून्य परिकल्पना को अस्वीकृत किया जाता है (नेज़ेविक, 2020)। उपयुक्त विधि के माध्यम से टी-मान ज्ञात नहीं होता है, लेकिन तालिका में दिए गए माध्य अंतर को मानक त्रुटि से भाग करने पर टी-मान को प्राप्त किया जा सकता है (गिग्नैक, 2019)। यहाँ माध्य अंतर (1.281) एवं मानक त्रुटि (.592) है। माध्य अंतर को मानक त्रुटि से भाग करने पर (5.138/.546 = 2.16) टी-मान 2.16 प्राप्त हुआ है। यह स्वतंत्रता का अंश 478 पर 0.05 स्तर पर सार्थक है। अर्थात शून्य परिकल्पना को अस्वीकृत किया जाता है।

परिणाम

जीवन कौशल के विकास में बाल संसद संचालित एवं बाल संसद विहीन विद्यालयों की भूमिका का तुलनात्मक अध्ययन करना है। अध्ययन के पश्चात यह पाया गया कि बाल संसद संचालित समूह के विद्यार्थियों का माध्य फलांक बाल संसद विहीन समूह के विद्यार्थियों के माध्य फलांक सार्थक रूप से अधिक हे। यह अंतर इसलिए प्राप्त हुआ है, क्योंकि बाल संसद संचालित विद्यालय के विद्यार्थी किसी कार्यक्रम का आयोजन करने से पूर्व ही उसकी योजना का निर्माण कर लेते हैं, फिर सभी कार्यों को छोटे-छोटे समूहों में विभक्त कर लेते हैं। प्रत्येक समूह का एक नेतृत्वकर्ता होता है जिसके दिशानिर्देश में उस कार्य को संपन्न किया जाता है। यह संपूर्ण प्रक्रिया शिक्षक की देखरेख में होती है तथा कक्षा शिक्षण के दौरान शिक्षकों के द्वारा प्रस्तुत किए जाने वाले ज़्यादातर उदाहरण विद्यार्थियों के दैनिक जीवन से संबंधित

होते हैं जो विद्यार्थियों को उनके संबंधित विषयों को समझने और आत्मसात करने में सहायता प्रदान करते हैं। विद्यार्थियों को शारीरिक एवं मानसिक रूप से स्वस्थ रखने हेतु विद्यालय में समय-समय पर व्यायाम शिविर एवं खेल प्रतियोगिता का आयोजन होता रहा है तथा शिक्षक का सदैव यह प्रयास रहता है कि विद्यार्थी विद्यालय एवं घर को समान रूप से देखें अर्थात जैसे घर में विद्यार्थी रहकर अपने दायित्वों का निर्वहन करते हैं वैसे ही विद्यार्थी विद्यालय के प्रति भी अपने दायित्वों का निर्वहन करें। पूर्व में हुए शोध कार्य के परिणाम भी हमारे शोध परिणाम का समर्थन करते हैं। रोबिसन और अन्य (2019), एवं मैकमुलेन (2018) ने भी नेतृत्व क्षमता, आत्मरक्षा, आत्म जागरूकता एवं निर्णय क्षमता से संबंधित शोध कार्य किए हैं एवं शोध परिणामों में पाया गया है कि बाल संसद के माध्यम से विद्यार्थी मौलिक एवं स्वाभाविक क्रियाओं को प्रदर्शित करते हैं जिससे विद्यार्थी नेतृत्व क्षमता, आत्मरक्षा, आत्म जागरूकता एवं निर्णय क्षमता आदि से संबंधित विषय के व्यावहारिक पक्ष को सरलता से समझ सकते हैं।

द्वितीय उद्देश्य

उपयुक्त तालिका-3 से यह स्पष्ट होता है कि बाल संसद संचालित विद्यालय के लड़कों एवं लड़कियों के जीवन कौशल के माध्य फलांकों में अंतर के लिए 95 प्रतिशत बायस करेक्टेड एक्सिलरेटेड अंतराल (.333, 3.772) है। चूँकि इन के माध्य फलांकों में अंतर के लिए 95 प्रतिशत विश्वस्तता अंतराल (CI) की निम्नतम एवं उच्चतम सीमाएँ धनात्मक हैं इसलिए 'बाल संसद संचालित विद्यालय के लड़कों एवं लड़कियों की जीवन कौशल के माध्य फलांकों में सार्थक अंतर नहीं है' की शून्य परिकल्पना को अस्वीकृत किया जाता है (नेज़ेविक, 2020)। उपयुक्त विधि के माध्यम से टी-मान ज्ञात नहीं होता है, लेकिन तालिका में दिए गए माध्य अंतर को मानक त्रुटि से भाग करने पर टी-मान को प्राप्त किया जा सकता है (गिग्नैक, 2019)। यहाँ माध्य अंतर (2.107) एवं मानक त्रुटि (.904) है। माध्य अंतर को मानक त्रुटि से भाग करने पर (2.107/.904 = 2.33) टी-मान 2.33 प्राप्त हुआ है। यह स्वतंत्रता का अंश 235 पर 0.05 स्तर पर सार्थक है अर्थात शून्य परिकल्पना को अस्वीकृत किया जाता है।

तालिका 3— बाल संसद संचालित विद्यालय के लिंग (लड़के एवं लड़कियाँ) के आधार पर जीवन कौशल के अभिवृत्ति फलांकों का बूटस्ट्रैप स्वतंत्र प्रतिदर्श परीक्षण

					बूटस्ट्रैप (Bootstrap)			टी-मान	सार्थक स्तर
		माध्य अंतर	बायस	मानक त्रुटि	सार्थकता (द्वि-पुच्छीय)	95% विश्वस्तता अंतराल निम्नतम	95% विश्वस्तता अंतराल उच्चतम		
जीवन कौशल प्राप्तांक	कल्पित समान प्रसारण	2.107	-.014	.904	.023	.333	3.772	2.33	0.05 स्तर पर सार्थक है।
	कल्पित समान प्रसारण	2.107	-.014	.904	.023	.333	3.772		

परिणाम

प्रस्तुत शोध-पत्र का जीवन कौशल के विकास में बाल संसद की भूमिका का लिंग के आधार पर तुलनात्मक अध्ययन करना है। अध्ययन के पश्चात यह पाया गया कि जीवन कौशल के विकास में बाल संसद की भूमिका में लड़के एवं लड़कियों के माध्य फलांकों में सार्थक अंतर पाया गया है। ऐसा अंतर इसलिए प्राप्त हुआ, क्योंकि सामान्यतया बाल संसद संचालित विद्यालयों में किसी कार्यक्रम की योजना का निर्माण एवं क्रियान्वयन लड़कों के द्वारा ही किया जाता है। यह पाया गया है कि योजना निर्माण के समय लड़कियाँ उस समूह का भाग होती हैं लेकिन अपने विचार को प्रस्तुत करने में वह संकोच करती पाई गईं। विद्यालय में जब किसी रैली का आयोजन होता है तब वहाँ लड़के अपनी पूर्ण रूप से सहभागिता देते हैं। विद्यालय में व्यायाम शिविर एवं खेल प्रतियोगिता में सहभाग करने के लिए लड़कियाँ अपने अनुजों को प्रोत्साहित अवश्य करती हैं, लेकिन इसका क्रियान्वयन लड़के ही करते हैं। विद्यालय एवं घर के दायित्वों के संबंध में यह देखा गया है कि लड़के विद्यालय दायित्वों के प्रति अधिक समर्पित पाए गए, वहीं लड़कियाँ अपने घर के दायित्वों के प्रति अधिक समर्पित थी। मैकमुलेन (2018), गातुमु और अन्य (2018) ने शोध कार्य में पाया है कि नेतृत्व क्षमता, आत्मरक्षा, आत्म जागरूकता एवं निर्णय क्षमता के व्यावहारिक पक्ष को विद्यार्थियों को सिखाने में लिंग का प्रभाव पड़ता है, लेकिन प्रजापति एवं अन्य (2017) के परिणाम हमारे परिणाम से विपरीत पाए गए हैं। इन्होंने अपने शोध परिणाम में पाया है कि नेतृत्व क्षमता, आत्मरक्षा, आत्म जागरूकता एवं निर्णय क्षमता आदि के व्यावहारिक पक्ष को विद्यार्थियों को सिखाने में लिंग का कोई प्रभाव नहीं पड़ता है।

तृतीय उद्देश्य

उपयुक्त तालिका 4 से यह स्पष्ट होता है कि बाल संसद संचालित शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के विद्यालयों के विद्यार्थियों की जीवन कौशल के माध्य फलांकों में अंतर के लिए 95 प्रतिशत बायस करेक्टेड एक्सिलरेटेड अंतराल (1.416, 4.955) है। चूंकि इनके माध्य अंतर के लिए 95 प्रतिशत विश्वस्तता अंतराल (CI) की निम्नतम एवं उच्चतम सीमाएँ धनात्मक हैं, इसलिए 'बाल संसद संचालित शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के विद्यालयों के विद्यार्थियों की जीवन कौशल के माध्य फलांकों में सार्थक अंतर नहीं है' की शून्य परिकल्पना को अस्वीकृत किया जाता है (नेज़ेविक 2020)। उपयुक्त विधि के माध्यम से टी-मान ज्ञात नहीं होता है, लेकिन तालिका में दिए गए माध्य अंतर को मानक त्रुटि से भाग करने पर टी-मान को प्राप्त किया जा सकता है (गिग्नैक, 2019)। यहाँ माध्य अंतर (3.181) एवं मानक त्रुटि (.893) है। माध्य अंतर को मानक त्रुटि से भाग करने पर (3.181/.893 = 3.56) टी-मान 3.56 प्राप्त हुआ है। यह स्वतंत्रता का अंश 235 पर 0.05 स्तर पर सार्थक है। अर्थात् शून्य परिकल्पना को अस्वीकृत किया जाता है।

परिणाम

जीवन कौशल के विकास में बाल संसद की भूमिका का शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के आधार पर तुलनात्मक अध्ययन करना है। अध्ययन के पश्चात यह पाया गया है

तालिका 4— बाल संसद संचालित विद्यालयों का क्षेत्र (शहरी एवं ग्रामीण) के आधार पर जीवन कौशल के अभिवृत्ति फलांकों का बूटस्ट्रैप स्वतंत्र प्रतिदर्श परीक्षण

				बूटस्ट्रैप			टी-मान	सार्थकता स्तर
		माध्य अंतर	मानक त्रुटि	सार्थकता (द्वि-पुच्छीय)	95% विश्वस्तता अंतराल			
					निम्नतम	उच्चतम		
जीवन कौशल प्राप्तांक	कल्पित समान प्रसारण	3.181	.893	.002	1.416	4.955	3.56	0.05 स्तर पर सार्थक है।
	कल्पित समान प्रसारण	3.181	.893	.002	1.416	4.955		

कि जीवन कौशल के विकास में बाल संसद की भूमिका में शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के विद्यालय के विद्यार्थियों के माध्य फलांकों में सार्थक अंतर पाया गया है। यह अंतर इसलिए दृष्टिगोचर होता है। क्योंकि शहरी क्षेत्रों में स्थित बाल संसद संचालित विद्यालय के विद्यार्थियों द्वारा विद्यालयी कार्यक्रम, रैलियों एवं खेल प्रतियोगिता का आयोजन अधिक सक्रियता से किया जाता है तथा इस सक्रियता में विद्यालय के शिक्षक अपनी अहम भूमिका निभा रहे हैं। वहीं ग्रामीण क्षेत्रों में स्थित बाल संसद संचालित विद्यालय में किए जाने वाले प्रयासों की मात्रा इन अल्पत्तम है तथा शिक्षकों द्वारा इसके प्रति निम्न सक्रियता पाई गई है। पूर्व में हुए अध्ययन के परिणाम भी हमारे शोध के परिणाम का समर्थन करते हैं। ली (2016) एवं नायर (2013) ने शोध कार्य में पाया है कि नेतृत्व क्षमता, आत्मरक्षा, आत्म जागरूकता एवं निर्णय क्षमता आदि के व्यावहारिक पक्ष को विद्यार्थियों को सिखाने में क्षेत्र या निवास स्थान का सार्थक प्रभाव पड़ता है। अतः कहा जा सकता है कि बाल संसद में सभी विद्यार्थी समान रूप से प्रतिभाग करते हैं यह मंच विद्यार्थियों को स्वतंत्र रूप से अपने विचारों प्रेषित करने का अवसर प्रदान करता है, लेकिन निवास स्थान/क्षेत्र के आधार पर विद्यार्थी को नेतृत्व क्षमता, आत्मरक्षा, आत्म जागरूकता एवं निर्णय क्षमता आदि के व्यावहारिक पक्ष को विद्यार्थियों को बाल संसद के माध्यम से सिखाया जाए तो इस पर क्षेत्र/निवास स्थान का प्रभाव पड़ सकता है।

शैक्षिक निहितार्थ

जीवन कौशल अनुकूली तथा सकारात्मक व्यवहार की योग्यताएँ हैं जो विद्यार्थियों को दैनिक जीवन की आवश्यकता और समस्याओं का सामना एवं उसे प्रभावी रूप से समाधान के लिए सक्षम बनाती हैं। जीवन कौशल का विकास विद्यार्थियों के जीवन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। समाज विरोधी विद्यार्थियों की आक्रामक प्रवृत्तियों पर रोक लगाने के लिए जीवन कौशल का ही प्रयोग किया जाता है। वर्तमान समय के विद्यार्थी जीवन की सच्चाइयों व व्यावहारिकता से परिचित नहीं हो पाते हैं। इसी को

ध्यान में रखते हुए विद्यालय स्तर पर जीवन कौशल शिक्षा लागू किया जा रहा है। विद्यार्थी के जीवन में कई बार ऐसे विषम परिस्थितियाँ आती हैं जब वह यह सुनिश्चित नहीं कर पाते कि वह क्या करें? ऐसे अवसर पर जीवन कौशल शिक्षा की प्रेरणा ही उसे सही पथ प्रदर्शन प्रदान करती है। विद्यार्थी अपनी अंतर्निहित शक्तियों को इस शिक्षा के माध्यम से ही पहचान सकते हैं। अतः प्राथमिक शिक्षा में जीवन कौशल शिक्षा का उद्देश्य स्वयं को पहचानने व जीवन की चुनौतियों का सामना करने में विद्यार्थियों को पारंगत करना है, जिससे वह भविष्य में एक सकारात्मक दृष्टिकोण के साथ राष्ट्र निर्माण में योगदान कर सके। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के बिंदु संख्या 4.5 में यह कहा गया है कि 'पाठयक्रम की विषयवस्तु को प्रत्येक विषय को कम करके इसे बेहद बुनियादी चीज़ों पर केंद्रित किया जाएगा जिससे विद्यार्थियों में आलोचनात्मक चिंतन एवं समग्र, खोज आधारित, चर्चा आधारित एवं विश्लेषण आधारित अधिगम पर आवश्यक ध्यान दिया जा सके।' बाल संसद, जिसकी प्रकृति ही क्रियात्मक है अर्थात इसमें विद्यार्थी करके सीखते हैं। यह विद्यार्थियों में जीवन कौशल के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है क्योंकि इसमें क्रिया आधारित शिक्षण पर बल दिया जाता है। बाल संसद के द्वारा विद्यार्थी न केवल सैद्धांतिक ज्ञान प्राप्त करते हैं, अपितु उन्हें क्रियात्मक ज्ञान की भी प्राप्ति होती है और यह क्रियात्मक ज्ञान उनमें वास्तविक परिस्थिति में चिंतन, समस्या समाधान, आलोचनात्मक चिंतन, आत्म-जागरूकता एवं सहानुभूति आदि कौशलों का विकास करता है। इसलिए बाल संसद को प्राथमिक स्तर पर पूर्णतः लागू किया जाए तो यह जीवन कौशल के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है।

निष्कर्ष

जीवन कौशल के विकास में बाल संसद की भूमिका का शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के आधार पर तुलनात्मक अध्ययन करना है। अध्ययन के पश्चात यह पाया गया है कि जीवन कौशल के विकास में बाल संसद की भूमिका में शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के विद्यालय के विद्यार्थियों के माध्य फलांकों में सार्थक अंतर पाया गया है। यह अंतर इसलिए दृष्टिगोचर होता है, क्योंकि शहरी क्षेत्रों में स्थित बाल संसद संचालित विद्यालय के विद्यार्थियों द्वारा विद्यालयी कार्यक्रम, रैलियाँ एवं खेल प्रतियोगिता का आयोजन अधिक सक्रियता से किया जाता है तथा इस सक्रियता में विद्यालय के शिक्षक अपनी अहम भूमिका निभाते हैं। वहीं ग्रामीण क्षेत्रों में स्थित बाल संसद संचालित विद्यालय में किए जाने वाले प्रयासों की मात्रा अल्पतम है तथा शिक्षकों द्वारा इसके प्रति निम्न सक्रियता पाई गई हैं। पूर्व में हुए अध्ययन के परिणाम भी हमारे शोध के परिणाम का समर्थन करते हैं। ली (2016) और नायर (2013) शोध कार्य में पाया है कि नेतृत्व क्षमता, आत्मरक्षा आत्म जागरूकता एवं निर्णय क्षमता आदि के व्यावहारिक पक्ष को विद्यार्थियों को सिखाने में क्षेत्र या निवास स्थान का सार्थक प्रभाव पड़ता है। अतः कहा जा सकता है कि बाल संसद में सभी विद्यार्थी समान रूप से प्रतिभाग करते हैं। यह मंच विद्यार्थियों को स्वतंत्र रूप से अपने विचारों को प्रेषित करने का अवसर प्रदान करता है, लेकिन निवास स्थान/क्षेत्र के आधार पर विद्यार्थी को नेतृत्व क्षमता, आत्मरक्षा,

आत्म जागरूकता एवं निर्णय क्षमता आदि के व्यावहारिक पक्ष को विद्यार्थियों को बाल संसद के माध्यम सिखाया जाए तो इस पर क्षेत्र निवास स्थान का प्रभाव पड़ सकता है।

संदर्भ

गिग्नैक, जी.ई. 2019. डिफरेंस बिटवीन टू मीन्स 2019. पर्थ, ऑस्ट्रेलिया. डिफरेंस बिट्वीन टू मीन्स - 2019.pdf (googlegroups.com)

ड्यूर्डेन, एम.डी. और अन्य 2012. मेजरींग लाइफ स्किल्स : स्टैंडराइजिंग द असेसमेंट ऑफ यूथ डेवलपमेंट इंडीकेटर्स. *जर्नल ऑफ यूथ डेवलपमेंट*. 7(1), पृ.सं. 99–174.

दीक्षित, पी. 2018. बाल संसद के रास्ते. *प्राथमिक शिक्षक*. 42(4), पृ.सं. 36–41.

नशीदा, ए. और अन्य 2019. ए नरेटिव सिस्टेमेटिक रिव्यू ऑफ लाइफ स्किल्स एजुकेशन : इफेक्टिवनेस, रिसर्च गैप और प्रयौरिटिज. *इंटरनेशनल जर्नल ऑफ एडॉलसैंट्स और यूथ*. 24(3). पृ.सं. 362–379.

नायर, जी.जी. 2013. एम.एल.एल. इन लाइफ स्किल्स एमांगस्ट प्री-यूनिवर्सिटी कॉलेज स्टूडेंट्स ऑफ मैसूर. *काउंसिल ऑफ एडुलाइट*. 2(4), पृ.सं. 9–15.

प्रजापति, आर.बी. शर्मा और डी. शर्मा. 2017. सिग्निफिकैन्स ऑफ लाइफ स्किल्स एजुकेशन. *कंटेंपररी इश्यूज इन एजुकेशन रिसर्च*. 10(1), पृ.सं.1–6.

फयोईन. ए. 2016. प्रोस्पेक्ट्स ऑफ मल्टीलेवेल कम्युनिकेशन बाई चिल्ड्रेन और यंग पीपल इन अफ्रीका : ए केस स्टडी ऑफ द साउथ अफ्रीकन चिल्ड्रेन्स पार्लियामेंट. *इंटरनेशनल जर्नल ऑफ मीडिया, जर्नलिज्म और मास कम्युनिकेशंस*. 2(3), पृ.सं. 7–16.

नेज़ेविक ए. 2020. ओवरलैप्पिंग कॉन्फीडेंस इंटरवल्स और स्टैटिस्टिकल सिग्निफिकेन्स. *कॉर्नेल स्टैटिस्टिकल कंसल्टिंग यूनिट*. पृ.सं. 1–3.

मुछाल, एम.के. 2019. ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थी-शिक्षकों की जीवनशैली का अध्ययन. *भारतीय आधुनिक शिक्षा*. 30(3), पृ.सं. 71–77.

मैकमुलेन, जे.डी. और एन. मैकमुलेन 2018. इवैल्यूएशन ऑफ ए टीचर-लेड, लाइफ-स्किल्स इंटरवैन्शन फॉर सेकेंडरी स्कूल स्टूडेंट्स इन यूगांडा. *सोशल साइंस और मेडिसिन*. 217, पृ.सं. 10–17.

रोबिसन, एम.ए. और अन्य 2019. लाइफ स्किल्स इन्सट्रक्शन फॉर चिल्ड्रेन विथ डेवलपमेंटल डिसएबिलिटीस. *जर्नल ऑफ एप्लाइड बिहेवियर एनालिसिस*. 53(1), पृ.सं. 431–448.

ली., जे.ची. 2016. करिकुलम रिफोर्म और सपोर्टिंग स्ट्रक्चर्स ऐट स्कूल : चैलेंजेस फॉर लाइफ स्किल्स प्लानिंग फॉर सेकेंडरी स्कूल्स स्टूडेंट्स इन चाइना (विथ परटिक्युलर रिफ्रेंस टू हाँग-काँग). *एजुकेशन रिसर्च फॉर पालिसी और प्रैक्टिस*. 16(1), पृ.सं. 61–75.

शिक्षा मंत्रालयण. 2020. स्कूलों में पाठ्यक्रम और शिक्षण-शास्त्र : अधिगम समग्र, एकीकृत, आनंददायी और रुचिकर होना चाहिए. *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020*. पृ.सं. 18–31. भारत सरकार, नई दिल्ली. https://www.education.gov.in/sites/upload_files/mhrd/files/NEP_final_HINDI_0.pdf से प्राप्त किया गया।